भारतीय हस्तकला की परंपराएँ

भूत, वर्तमान और भविष्य

कक्षा 12 के लिए हस्तकला की पाठ्यपुस्तक

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जून 2011 आषाढ़ 1933

PD 2T MK

₹ ??.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा .... द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5007-171-7

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : *नीरजा शुक्ला*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *शिव कुमार*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *गौतम गांगुली*
संपादक : *मीरा कांत*
उत्पादन सहायक : *राजेश पिप्पल*

आवरण एवं सज्जा
सुनीता कानविंदे

डिजिटल सहयोग
जसविंदर सिंह

प्राक्कथन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ़.)–2005 में बच्चों के विद्यालयी जीवन को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़े जाने का सुझाव दिया गया है। यह सिद्धांत किताबी पढ़ाई की परंपरा से हटने की सलाह देता है, जो हमारी प्रणाली को आकार देता आया है और विद्यालय, घर तथा समुदाय के बीच एक अंतराल पैदा करता है। एन.सी.एफ़. के आधार पर विकसित पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकें इस विचार को कार्यान्वित करने का एक प्रयास हैं। इनमें सीखने की यंत्रवत् परिपाटी और विभिन्न विषय क्षेत्रों के बीच एक स्पष्ट सीमा-रेखा बनाए रखने को निरुत्साहित करने का भी प्रयास किया गया है। हमें आशा है कि इन उपायों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में बनाई गई बाल केंद्रित शिक्षा प्रणाली की दिशा में हम और भी आगे बढ़ सकेंगे।

एन.सी.एफ़. की एक अन्य मुख्य सिफ़ारिश उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उपलब्ध विकल्पों की संख्या बढ़ाने की है। इस सिफ़ारिश का पालन करते हुए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) ने एन.सी.एफ़. में कुछ नए विषय क्षेत्रों को शामिल करने का निर्णय लिया, जिससे रचनात्मकता और अंतरविषयक समझ को प्रोत्साहन मिलेगा। भारत की विरासत हस्तकला एक ऐसा क्षेत्र गठित करती है, जो शिल्प के संदर्भ में सौंदर्य बोध और उत्पादक अधिगम्यता की खोज में एक अनोखा स्थान बनाती है। वर्तमान पुस्तक भारत की जीवंत हस्तकला परंपरा के विशेष अध्ययन की ओर शिक्षा का एक नया आयाम प्रदान करती है, जो पृष्ठभूमि के ज्ञान के साथ कार्यक्षेत्र अध्ययन को जोड़ने और शिल्पकारों तथा उनके शिल्प अनुभवों पर केंद्रित होगा।

यह प्रयास केवल तभी सफल हो सकता है, जब विद्यालयों के प्रधानाचार्य, शिक्षक एवं माता-पिता इस बात के महत्त्व को समझें कि यदि बच्चों को स्थान, समय और स्वतंत्रता दी जाए, तो वे बड़ों द्वारा दी गई जानकारी से नया ज्ञान उत्पन्न कर सकते हैं। निर्धारित पाठ्यपुस्तकों को परीक्षा का एकमात्र आधार मानने के कारण ही अन्य संसाधनों और सीखने के स्थलों की उपेक्षा की जा रही है। रचनात्मकता का पोषण और पहल तभी संभव है, जब हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चों को भागीदार के रूप में शामिल करें और उन्हें मात्र ज्ञान के स्थिर ग्राहियों के रूप में न लें।

इस लक्ष्य के कारण विद्यालय के नियमित पाठ्यक्रम और कार्यशैली में काफ़ी बदलाव आएगा। दैनिक समय तालिका में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के कार्यान्वयन पर मेहनत करना, ताकि शिक्षण के लिए निश्चित दिनों की आवश्यक संख्या वास्तव में पूरी की जा सके। शिक्षा और मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त विधियाँ भी यह निर्धारित करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यालय में बच्चों के जीवन में
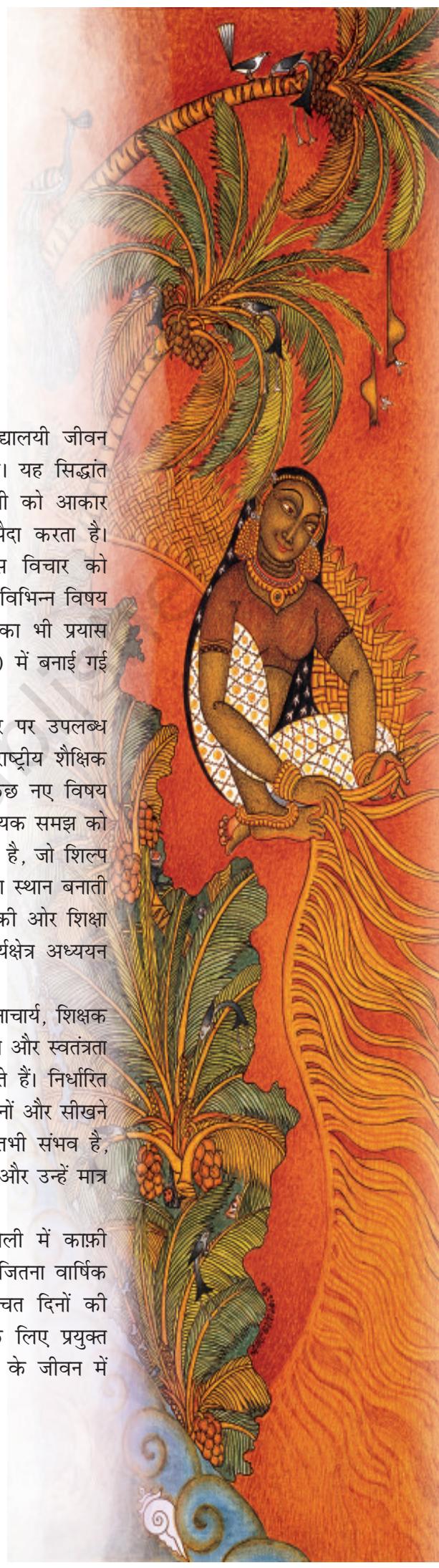
सुखद अनुभव लाने में कितनी प्रभावी सिद्ध हुई, बजाय इसके कि वे इसे तनाव या ऊब का एक स्रोत मानें। पाठ्यचर्या के रचनाकारों ने बाल मनोविज्ञान और शिक्षण के लिए उपलब्ध समय पर अधिक ध्यान देते हुए, विभिन्न चरणों में ज्ञान की पुनः संरचना और पुनः अभिविन्यास द्वारा पाठ्यक्रम संबंधी बोझ की समस्या को संबोधित करने का प्रयास किया है। इस पाठ्यपुस्तक में चिंतन और विस्मय के अवसरों, छोटे समूहों में चर्चा और स्वयं करने के अनुभव वाले कार्यकलापों को अधिक प्राथमिकता देकर इस प्रयास को आगे बढ़ने की कोशिश की गई है।

एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तक विकास समितियों द्वारा किए गए कठिन परिश्रम की प्रशंसा करती है। कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए अंत:क्रियात्मक पाठ्यपुस्तक *भारतीय हस्तकला की परंपराएँ – भूत, वर्तमान और भविष्य* के विकास का कार्य चुनौतीपूर्ण था और इसके लिए *मुख्य सलाहकार*, डॉ. शोभिता पुंजा के अथक प्रयास प्रशंसायोग्य हैं। हम उन संस्थानों और संगठनों के ऋणी हैं, जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्रियों और कार्मिकों पर कार्य करने की उदारतापूर्वक अनुमति दी। हम मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा नियुक्त राष्ट्रीय निगरानी समिति के सदस्यों के प्रति विशेष रूप से आभारी हैं, जिसमें अध्यक्ष प्रोफ़ेसर मृणाल मिरी और प्रोफ़ेसर जी. पी. देशपांडे ने अपना मूल्यवान समय और योगदान दिया। अपने उत्पादों की गुणवत्ता में व्यवस्थित सुधार और निरंतर उन्नति के लिए वचनबद्ध संगठन के रूप में एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत करती है, जो भविष्य में इसके संशोधन और परिष्करण में हमारी सहायता करेंगे।

नयी दिल्ली — *निदेशक*
मई 2010 — राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

प्रस्तावना

हस्तशिल्प आज भी भारतीय संस्कृति और समाज का एक रंग-बिरंगा पक्ष है। दस्तकारी भारत के लोगों की संस्कृति में मानवीय इतिहास के आरंभ से जुड़ी हुई है। गाँवों, कस्बों, आँगनों तथा धार्मिक प्रतिष्ठानों में शिल्प दैनिक जीवन का एक अविभाज्य हिस्सा रहे हैं। भारत में हस्तशिल्प के अनेक प्रकार और उनके कौशल उपलब्ध हैं, जो सदियों से निरंतर विकसित होते हुए दुनिया के किसी अन्य देश से अलग, भारत को एक अनोखा देश बनाते हैं। हमारा देश दुनिया के उन कुछ देशों में से एक है, जहाँ हस्तकलाओं का उपयोग सभी लोगों द्वारा किया जाता है।

हस्तकलाएँ बड़ी संख्या में लोगों को आजीविका प्रदान करती हैं। इनका भारत के निर्यात तथा विदेशी मुद्रा अर्जन में अपार योगदान है। कालीन उद्योग, रत्न हस्तनिर्मित आभूषण उद्योग भारत के कुल निर्यातों का पाँचवाँ हिस्सा बनाते हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि आज 1 करोड़ 20 लाख से अधिक शिल्पकार इस क्षेत्र में कार्यरत हैं। हस्तशिल्प निर्यात प्रवर्तन परिषद् द्वारा धातु के बर्तनों, काष्ठ, हाथ से छपे हुए वस्त्रों और स्कार्फ़, शॉल, आभूषण आदि के निर्यात में पिछले 5 वर्षों के दौरान 53 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाई गई है। इसके बावजूद आज भारत 3 करोड़ से अधिक शिल्पकारों और बुनकरों की अपार संभाव्यता वाला क्षेत्र होने के बावजूद हस्तशिल्प के विश्वव्यापार में केवल दो प्रतिशत योगदान देता है। सरकारी सहायता से आज चीन ने इसी क्षेत्र में विश्व व्यापार का 17 प्रतिशत से अधिक हिस्सा लिया हुआ है।

भारत में हस्तशिल्प क्षेत्र की सरकारी नीति के महत्त्व को पहचानते हुए निम्नलिखित कार्य किए गए हैं–

- हस्तशिल्प से रोज़गार और आय के अवसरों को बढ़ाना;
- हस्तशिल्प घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार को बढ़ाकर इसे एक आर्थिक गतिविधि के रूप में स्थायी बनाना;
- लुप्त हो जाने के खतरेवाले हस्तशिल्प की पारंपरिक सुंदरता तथा कौशलों का संरक्षण और उन्हें पुन: भारत में दैनिक जीवन का एक अनिवार्य भाग बनाना है।

औद्योगिक निर्माता भारत के हस्तशिल्प क्षेत्र के सबसे बड़े खतरों में एक हैं, जो भारत और विदेश में बड़ी मात्रा में सस्ते उत्पाद बनाते हैं तथा बदलते रुझानों और फ़ैशन को पूरा करने के लिए तेज़ी से विविधता ले आते हैं। आज वैश्वीकरण तथा व्यापार नीतियों के उदारीकरण का अर्थ है कि सभी अन्य देशों के गुणवत्तापूर्ण हस्तनिर्मित उत्पाद भारत के मौजूदा हस्तशिल्प उद्योग में प्रवेश और प्रतिस्पर्द्धा कर सकते हैं। देश के अंदर हस्तशिल्प उद्योग को बड़े बहुराष्ट्रीय तथा कॉर्पोरेट घरानों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करनी है

क्योंकि युवा वर्ग ब्रांडिड कपड़े और जीवन शैली के अनुसार महँगे उत्पाद खरीदते हैं। अच्छी विपणन कार्यनीतियाँ और महँगे विज्ञापन अभियानों द्वारा इन बड़े कॉर्पोरेट घरानों से भारतीय हस्तशिल्प समुदाय को हानि पहुँचती है। कच्ची सामग्री, कार्यपूँजी, शैक्षिक सुविधाओं की कमी और बदलते बाज़ारों की कम समझ से हस्तशिल्प समुदाय अत्यंत सुभेद्य बन गया है।

भारत में हस्तशिल्प क्षेत्र में अपार भावी संभाव्यता निहित है। भारतीय हस्तशिल्प के उत्पादों के लिए अमरीका, इंगलैंड, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूरोप और मध्य पूर्वी देशों से निर्यात की निरंतर माँगे बढ़ती जा रही हैं। हमें हस्तशिल्प समुदाय को वैश्विक बाज़ार परिप्रेक्ष्य तथा इन नयी माँगों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन तथा विकास में विशेषज्ञता प्रदान करने की ज़रूरत है। यही कारण है कि विद्यालयों में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यह विषय प्रस्तावित किया जा रहा है, ताकि विद्यार्थी इस अपार संभाव्यतावाले आशाजनक क्षेत्र में एक व्यवसाय बनाने की सोच सकें।

आज पूरी दुनिया मौसम परिवर्तन पर बहस में लगी हुई है और ऐसे उत्पादों तथा गतिविधियों का महत्त्व बढ़ गया है, जो स्थायी हैं, पृथ्वी के लिए संवेदनशील और लोगों के लिए अनुकूल हैं। परिभाषा के अनुसार हस्तशिल्प का अर्थ है– हाथ से बना हुआ, जिसमें सरल ऊर्जा व सक्षम साधनों का उपयोग किया गया हो, जिसका पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव हो और कम से कम कार्बन फ़ुटप्रिंट उत्पन्न हों, जिसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्ची हस्तशिल्प सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है। हस्तशिल्प विभिन्न समुदायों के अनुकूल तैयार किया जाता है और इसका अत्यंत कलात्मक और कार्यात्मक मूल्य होता है। भारतीय हस्तशिल्प क्षेत्र द्वारा हस्तशिल्प प्रवर्तन और विकास संभव है तथा भारतीय हस्तशिल्प के लिए एक ब्रांड पहचान बनाई जा सकती है, जो इन वैश्विक सरोकारों को पूरा करती हो। हमें भारतीय हस्तशिल्प के लिए एक ऐसी ब्रांड पहचान बनाने की ज़रूरत है, जो इसे अन्य देशों में उपलब्ध विशेषताओं से भिन्न दर्शाती हो और साथ ही जो स्थायित्व, शैली, गुणवत्ता, कलात्मक उत्कृष्टता और प्रामाणिकता की समानार्थी भी हो।

हस्तशिल्प समुदाय, जो हमारे गाँवों और कस्बों में रोज़गार और आय का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत रहे हैं, उनकी समस्याओं और सरोकारों को संबोधित करने की भी आवश्यकता है। आज हमें इस क्षेत्र में निर्धनता, आय उत्पादन और महिला सशक्तीकरण जैसी समस्याओं को संबोधित करने की भी ज़रूरत है।

हमें हस्तशिल्प समुदाय और इससे संबंधित अन्य व्यक्तियों से युवा वर्ग के लिए एक नए और नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रम का विकास करने की अपेक्षा है, ताकि उन्हें ऐसे उपक्रम में लाया जा सके, जो हमारे मौजूदा हस्तशिल्प कौशलों और बौद्धिकता के उपयोग, डिज़ाइन और विकास द्वारा आय अर्जित करने में सहायता प्रदान करें। साथ ही तेज़ी से विकसित होते बाज़ार की संभाव्यता को समझने में मदद करें। इस पाठ्यक्रम में उन उत्कृष्ट हस्तशिल्पों को सामने लाने का प्रयास किया गया है, जिसके लिए भारत एक लंबे समय से प्रसिद्ध रहा है और जिसे एक नए और रचनात्मक उद्योग के रूप में विकसित करने के लिए उद्यमशीलता के कौशलों की आवश्यकता है।

यह पुस्तक कक्षा 12 के लिए है, जिसे तीन भागों में बाँटा गया है – भूत, वर्तमान और भविष्य, ताकि अलग-अलग अवधियों में भारतीय हस्तशिल्प के इतिहास और उसकी अवस्था की जाँच की जा सके।

हस्तशिल्प समुदाय की स्थिति बदलती ऐतिहासिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के साथ प्रत्येक काल में रूपांतरित होती रही है। जिस प्रकार हस्तशिल्प के उत्पाद बनाए और बेचे जाते हैं, उसमें भी महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है। पिछले समय के संदर्भ में हम आदान-प्रदान प्रणाली, आंतरिक और बाहरी व्यापार की बात करते हैं, जो उपनिवेश काल के दौरान व्यापार में हुआ। आज हम उन चुनौतियों की चर्चा करते हैं, जो वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प के उचित विपणन में निहित हैं। ये सभी अध्याय आपस में संबंधित है, जिससे विभिन्न ऐतिहासिक कालों में हस्तशिल्प के सामाजिक और आर्थिक पक्षों का सिंहावलोकन किया जा सके।

पहली इकाई में भूतकाल में हस्तशिल्प की अवस्था को समझाया गया है कि कई सौ वर्षों में हस्तशिल्प के कौशल किस प्रकार उच्च विशेषज्ञता वाले कलात्मक रूपों में विकसित हुए और आर्थिक व सांस्कृतिक बदलाव होने पर इनसे भारत की आज़ादी के पहले के युग में क्या बदलाव आया।

पहले अध्याय में बताया गया है कि भारत में हस्तशिल्प की समझ एक विशेष गतिविधि बन गई है, जो इतनी गुंथी हुई और जटिल है कि सभी समुदायों को कुछ विशेष हस्तशिल्प उत्पाद के उत्पादन में विशेषज्ञता पाने की ज़रूरत है। इस पुस्तक के अंतिम अध्याय में इस विचार पर दोबारा ध्यान दिया गया है कि भविष्य की सबसे महत्त्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है– डिज़ाइन विशेषज्ञता, कौशल तथा कलात्मकता को संरक्षित और पोषित करने के अर्थोपाय खोजना, जिससे भारतीय हस्तशिल्प परंपरा दुनिया में अपनी अनोखी स्थिति को बनाए रखना सुनिश्चित करे।

दूसरे अध्याय में बताया गया है कि भारतीय हस्तशिल्प की सुंदरता और चमक तथा कच्ची सामग्री की समृद्धि ने यूरोपीय व्यापारियों को भारत के साथ व्यापार संबंध बनाने के लिए आकर्षित किया, जिससे अंततः यहाँ उपनिवेश शासन लागू हुआ। उपनिवेश काल के दौरान यूरोपीय औद्योगिक क्रांति ने ही भारत में हस्तशिल्प और हस्तनिर्मित उत्पादों के लिए जोखिम पैदा किया। यही वह अवधि थी, जो मशीन बनाम हाथ के विवाद का केंद्र थी।

तीसरे अध्याय में गांधी जी के स्वराज का अनोखा दर्शन बताया गया है, जिसमें हस्तशिल्प और हस्त निर्मित उत्पादों से अपनी सभी जरूरतें पूरी करते हुए गाँव आत्मनिर्भर बनते हैं, बजाय इसके कि वे उद्योगों तथा मशीनों पर अधिक से अधिक निर्भर होते जाएँ।

हस्तशिल्प के पुनरुज्जीवन पर तैयार **दूसरी इकाई** में आज़ादी के समय से भारतीय हस्तशिल्प क्षेत्र और उनके सामने आईं कुछ चुनौतियों पर विचार किया गया है।
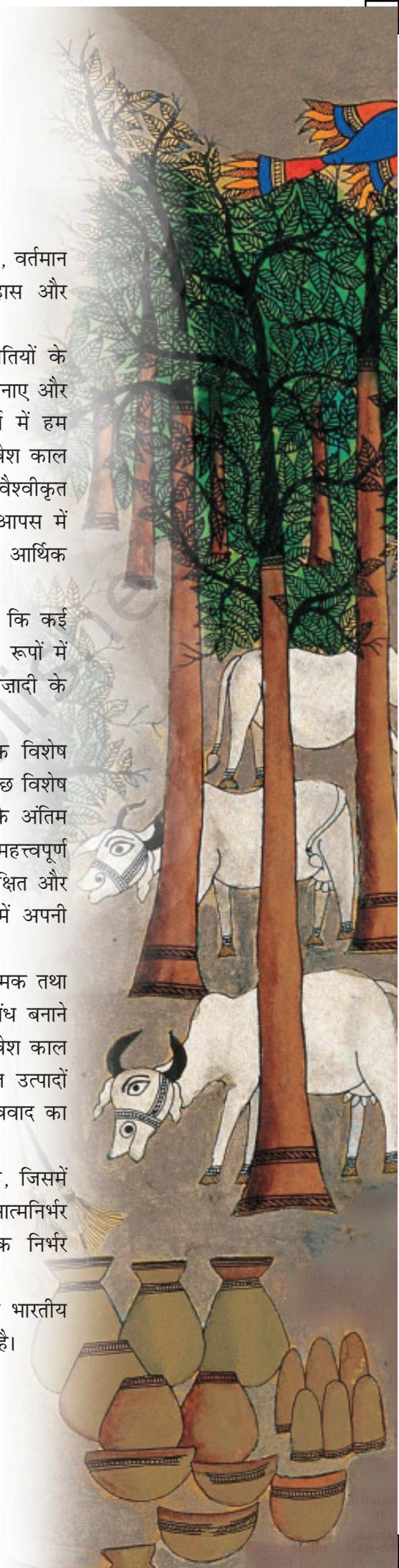
चौथा अध्याय आज़ादी के बाद की अवधि से संबंधित है, जब सरकार ने हस्तशिल्प के महत्त्व और व्यापार तथा निर्यात के संदर्भ में शिल्प समुदाय द्वारा दिए गए अपार आर्थिक योगदान को समझा। सरकार ने आधुनिक भारत में हस्तशिल्प को प्रोत्साहन देने के लिए योजनाएँ व कार्यक्रम आरंभ किए और संस्थानों तथा प्रणालियों की स्थापना की।

पाँचवें अध्याय में उन सरोकारों और समस्याओं में से कुछ को समझाया गया है, जो आज भी भारत के हस्तशिल्प समुदाय में बनी हुई हैं – लिंग की असमानताएँ, निरक्षरता, गरीबी आदि किस प्रकार दस्तकार समुदाय को इस बदलती दुनिया में शामिल होने से रोक रहे हैं।

छठे अध्याय में नयी और पुरानी उत्पादन और विपणन संरचनाओं के बीच एक चर्चा की गई है, जो एक वैश्विक दुनिया में नयी विपणन कार्यनीतियों के विकास की पृष्ठभूमि है, जहाँ सदियों पुरानी परंपराएँ, सामाजिक संरचनाएँ और हस्तशिल्प के संरक्षण पैटर्न बदल रहे हैं।

भविष्य की कार्यनीतियों की **तीसरी इकाई** में कल की चुनौतियों को संबोधित किया गया है, ताकि विद्यार्थी उन भूमिकाओं को आरंभ करने पर विचार कर सकें, जो उन्हें हस्तशिल्प उद्योग में निभानी चाहिए। आज विपणन दस्तकारी के लिए ऐसी कौन सी कार्यनीतियाँ विकसित की जा सकती हैं, जो उत्पादों के डिज़ाइनर, कलाकार और स्वतंत्र विक्रेता के रूप में शिल्पी का सम्मान और आदर कर सकती हैं।

सातवें अध्याय में व्यवस्थित रूप से एक समकालीन विपणनकारी नीति के तौर पर शहरी शिल्प बाज़ारों के परिणामों, लाभ और हानियों की छानबीन की गई है, जिनके विषय में हमें आशा है कि विद्यार्थी विपणन के लिए नयी कार्यनीतियों के विकास में विश्लेषण के कौशल अर्जित करेंगे, जो सुनिश्चित करते हैं कि कुशल शिल्प समुदाय इसका प्राथमिक और वास्तविक लाभार्थी है।

आठवें अध्याय में विद्यार्थियों के लिए अन्य अध्ययन प्रकरण दिए गए हैं, जो उन्हें यह सीखने में सक्षम बनाएँगे कि विपणन संभाव्यताओं का विश्लेषण कैसे किया जाए। पर्यटन उद्योग को नए बाज़ार के एक उदाहरण के रूप में समझाया गया है और यह पता लगाया गया है कि शिल्प समुदाय के जीवन को उन्नत बनाने में रचनात्मक समाधान कैसे प्राप्त किए जाएँ और दस्तकारी की गुणवत्ता में निरंतर सुधार कैसे किया जाए।

नौवें और अंतिम अध्याय में उसी मूल विचार को दोहराया गया है, जो कहता है कि हस्तशिल्प के लिए विशेष कौशलों, साधनों और विपणन अवसरों की ज़रूरत है। हस्तशिल्प की गुणवत्ता में लगातार सुधार लाने और इक्कीसवीं शताब्दी में उत्कृष्ट हस्तशिल्प की समकालीन चुनौतियों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन, शोध और विकास सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

इस पुस्तक को स्थानीय उदाहरण का प्रयोग करते हुए और विद्यार्थियों को ऐसी परियोजनाएँ और कार्य सौंपकर, जो इस विषय के अनुभव को और समृद्ध बनाए, अधिक रोचक बनाया जा सकता है।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

मुख्य सलाहकार

शोभिता पुंजा, *मुख्य कार्यपालन अधिकारी*, राष्ट्रीय संस्कृति कोष, नयी दिल्ली

सलाहकार

फ़ैसल अल्काज़ी, *निदेशक*, क्रिएटिव लर्निंग फ़ॉर चेंज, नयी दिल्ली

सदस्य

जया जेटली, *मुख्य कार्यपालन अधिकारी*, दस्तकारी हाट समिति, नयी दिल्ली

लैला तैयबजी, *अध्यक्ष और संस्थापक सदस्य*, दस्तकार, नयी दिल्ली

रुद्रांक्षु मुखर्जी, *इतिहासकार* एवं *संपादक*, संपादकीय, *दी टेलिग्राफ़*, कोलकाता

हिन्दी रूपांतर

अवंतिका त्रिपाठी, *अनुवादक*, यू-19, हुडको प्लेस, एंड्रूज़गंज, नयी दिल्ली

उमा शर्मा *पूर्व शिल्प संयोजक*, सी.सी.आर.टी, द्वारका, नयी दिल्ली

कनुप्रिया तनेजा, *पी.जी.टी.*, टैगोर पब्लिक स्कूल, जयपुर

ज्योति बख्शी, *पी.जी.टी.*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, राम कृष्ण पुरम, नयी दिल्ली

मधु मिश्रा, *प्रधानाचार्य*, धनबाद पब्लिक स्कूल, हीरक शाखा, धनबाद

मीनाक्षी कासलीवाल 'भारती', *अध्यक्ष*, चित्रकला विभाग, कानोड़िया पी. जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर

मुश्ताक ख़ान, *भूतपूर्व उपनिदेशक*, राष्ट्रीय हस्तकला एवं हथकरघा संग्रहालय, नयी दिल्ली

सुलेखा भार्गव, *सचिव*, सत्य ग्लोबल रजि. सोसायटी, दिल्ली

सदस्य-संयोजक

ज्योत्स्ना तिवारी, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, कला एवं सौंदर्य बोध शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पाठ्यपुस्तक के विकास की प्रक्रिया में समिति के सदस्यों के अतिरिक्त अनेक लोगों एवं संस्थानों का योगदान रहा है। इसके लगभग सभी चित्र सुनीता कानविंदे द्वारा दस्तकारी हाट समिति, नयी दिल्ली के लिए निर्मित विभिन्न राज्यों के शिल्प मानचित्रों से लिए गए हैं। इसके लिए हम विशेष रूप से जया जेटली, *मुख्य कार्यपालन अधिकारी*, दिल्ली हाट समिति के आभारी हैं, जिन्होंने इन चित्रों को पाठ्यपुस्तक में यथोचित स्थानों पर पुनः प्रकाशित करने की अनुमति दी है।

हम इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल एवं राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा संग्रहालय, नयी दिल्ली के निदेशकों के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने हमें संग्रहालय के छायाचित्रों को प्रकाशित करने की अनुमति दी। हम शोभिता पुंजा, *मुख्य कार्यपालन अधिकारी*, राष्ट्रीय सांस्कृतिक कोष, नयी दिल्ली के भी आभारी हैं, जिन्होंने अपनी पुस्तक *म्यूज़ियम्स ऑफ़ इंडिया* के छायाचित्र प्रकाशित करने की अनुमति दी।

इस पाठ्यपुस्तक में विभिन्न स्रोतों से समसामयिक मुद्दों के संदर्भ में अनुच्छेद उद्धृत किए गए हैं, जिनमें– द *टाइम्स ऑफ़ इंडिया, डाउन टू अर्थ, इंडिया मैगज़ीन* तथा *यंग इनटैक* जैसे समाचार पत्र और पत्रिकाएँ शामिल हैं। विभिन्न पुस्तकों से जानकारी को पुनः प्रस्थापित करने के लिए यथोचित उद्धरण लिए गए हैं। इन पुस्तकों में *दि अर्दन ड्रम*, पुपुल जयकर; द *मेकिंग ऑफ़ न्यू इंडियन आर्ट*, ताप्ती गुहा-ठाकुरता; *मार्को पोलो*– द *ट्रैवेलर*, रोनाल्ड लाथम; *थ्रेड्स एंड वॉयसेस*, जूडी फ्रेटर; और द *लाईफ ऑफ़ महात्मा गांधी*, लुई फ़िशर सम्मिलित हैं।

डीटीपी ऑपरेटर पवन कुमार बरियार व तनवीर अहमद और *कॉपी एडीटर* ममता गौड़ के हम विशेष रूप से आभारी हैं।

विषय-सूची